Teacher's Manual

GRADE 4
PREPARATORY STAGE

Tanquiri.AI

हिंदी

MASTERMIND

हिंदी कक्षा-4

पाठ-1 नर हो, न निराश करो मन को

❖ (क) 1. ब 2. अ 3. ब 4. ब 5. स (ख) 1. कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला? पथ आप प्रशस्त करो अपना 2. कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं? सब है जिनके अपने घर के। 3. 'हम भी कुछ है' यह ध्यान रहे!' कुछ हो, न तजो निज साधन को 4. निज लक्ष्य निरंतर भेद करो! मिलती 4. निज लक्ष्य निरंतर भेद करो! मिलती जिससे सुख की निधि है। (ग) ईश्वर ने तुमको हाथ दान किए हैं। सभी इच्छित वस्तु दिए हैं। 2. सब कुछ चला जाए पर मान न जाए। मरने के बाद हमारी बातें होती रहे। 3. केवल मेहनत ही एक उपलब्धि है। जिससे सुख का खजाना मिल सकता है। (घ) 1. हमें सहारा देने के लिए ईश्वर है। 2. 'हम भी कुछ हैं अर्थात् हमें स्वयं पर विश्वास रहे इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए।' 3. यदि ईश्वर द्वारा दिए गए वांछित विधान मिलने पर भी हम असफल हैं तो इसके दोषी हम स्वयं हैं। 4. नहीं, कोई भी धन अलभ्य नहीं है। 5. गौरव से सुख प्राप्त होता है। 6. हमें संभल जाना चाहिए क्योंकि समय हमारा इंतजार नहीं करेगा इसलिए समय का सदुपयोग जीवन की उन्नति का मार्ग है। 7. जग में कुछ काम करने और मरणोपरांत भी अपने नाम को जीवित रखने के लिए किए जाने वाले कार्यों को करने के लिए मनुष्य का जन्म हुआ है।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. ईश्वर 2. वांछित, 3. अलभ्य, 4. दुर्लभ, 5. भाग्यवाद (ख) 1. अखिलेश्वर = अखिल + ईश्वर 2. मरणोत्तर = मरण + उत्तर 3. जगदीश्वर = जगत + ईश्वर 4. दुर्लभ = दुर् + लभ (ग) 1.तरक्की के लिए उपयुक्त मार्ग चुनना चाहिए। 2. प्रार्थना ईश्वर तक पहुँचने का साधन है। 3. दूसरे में दोष निकालने से पहले अपने आप को देखना चाहिए। 4. कार्य ऐसा करो कि मरणोत्तर भी गौरव बना रहे। 5. परिश्रम से ही सच्चा सुख मिलता है।

पाठ-2 ध्रुव की भक्ति

❖ (क) 1. ब 2. स 3. अ (ख) 1. सुरुचि, सुनीति 2. विश्वास 3. तप 4. दुखी 5. खोज (ग) 1. ✓, 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓; (घ) 1. भगवान विष्णु ने ध्रुव से 2. माँ ने ध्रुव से 3. सुरूचि ने ध्रुव से 4. भगवान विष्णु ने ध्रुव से 5. माँ ने ध्रुव से (ङ) 1. सुरुचि ने ध्रुव से कहा कि तू राजा की गोद में बैठने योग्य नहीं है। पिता की गोद प्राप्त करने के लिए तुझे तप करना पड़ेगा ओर अगले जन्म में उसका पुत्र बनकर पैदा होना होगा। 2. ध्रुव की माँ उसे ढाँढस बँधाते हुए बोली कि तू मेरा पुत्र होने के कारण दुख भोग रहा है। 3. ध्रुव ने वन में जाकर तप करने का निश्चय किया। 4. भगवान विष्णु ने ध्रुव को दर्शन देकर कहा आँखे खोलो ध्रुव तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूर्ण होंगी। 5. इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है

कि कैसी भी परिस्थिति हो हमें ईश्वर पर विश्वास बनाकर रखना चाहिए। 6. ध्रुव राजा उत्तानपाद व रानी सुनीति के पुत्र थे। वे आसमान में एक तारे रूप में जाने जाते हैं।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. पंखे 2. चीटियाँ 3. डालियाँ 4. वधुएँ 5. गायें 6. छात्रों 7. सेवकों 8. लताएँ 9. कलमें 140. बुढ़ियाँ (ख) 1. ध्रुव की माता बहुत सुंदर है। 2. हमारा स्वभाव ही हमारी पहचान है। 3. समझदार वही हे जो समस्या में भी धीरज रखे। 4. साधारण जीवन उच्च विचार यह बुद्धिमान व्यक्तियों का गुण है। 5. ध्रुव को उसकी माता ने संभाला।

पाठ-3 मानव शरीर

❖ (क) 1. ब 2. स 3. स (ख) 1. मस्तिष्क 2. आँखें 3. जीभ 4. महत्त्वपूर्ण 5. गंध (ग) 1. ✗, 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓; (घ) हमारा शरीर मिट्टी, जल, अग्नि, आकाश, वायु इन पाँच तत्त्वों से मिलकर बना है। 2. हमारे शरीर को अजायबघर कहा गया है क्योंकि यह अद्भुत अंगों से भरा हुआ है। 3. मस्तिष्क हमारे शीर का नियंत्रण केंद्र है। मस्तिष्क शरीर में होने वाली सभी गतिविधियों को लगाम अपने हाथ में रखता है और उन्हें मनचाहे ढंग से चलाता है। 4. ज्ञानेंद्रियाँ पाँच हैं– आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा। हम अपने आस-पास वाले परिवर्तनों और हलचलों को अपनी ज्ञानेंद्रियों द्वारा भाप सकते हैं। 5. सभी अंगों में अद्भुत एकता है। इन सभी अंगों का संगठन इतनी कुशतला से हुआ है कि हर अंग का आपस में संबंध है और हर अंग अपना-अपना कार्य करता है।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 2. मूल्यहीन 3. ध्वंस 4. मीठा 5. अनुपयोगी 6. रोशनी 7. करुपता 8. अच्छाई (ख) 1. धरा, भू, भूमि 2. पानी, नीर, वारि 3. आग, अनल, ताप 4. अंबर, गगन, आकाश, 5. वायु, पवन, समीर

पाठ-4 बहादुर मानसी

❖ (क) 1. अ 2. स 3. ब 4. ब 5. अ (ख) 1. परिचय 2. मित्रता 3. घमंडी 4. आकर्षक 5. प्रशंसा (ग) 1. अध्यापिका ने मानसी 2. मानसी ने गीता से 3. गीता ने मानसी से 4. एक लड़की ने मानसी से (घ) 1. मानसी स्वभाव से शर्मीली थी। 2. कक्षा की लड़कियों को मानसी घमंडी लगी थी। 3. पिकनिक के बाद सहपाठियों ने मानसी को शर्मीली नाम दिया। 4. पिकनिक पर मानसी की एक सहपाठी गीता झील में गिर गई थी। 5. झील के पास पहुँचकर मानसी ने देखा कि यह कोई साधारण झील नहीं बल्कि एक दलदल है। 6. मानसी ने अपने थैले से चाकू निकाला और पास के एक बेल काटी और उसे गीता की तरफ फेंका। गीता ने उस बेल को पकड़ा और दूसरी ओर से मानसी उस बेल को खींचने लगी और बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगी। तभी अध्यापिकाएँ व अन्य सभी आ गए और गीता को बचा लिया।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. लड़का 2. सहपाठी 3. अध्यापक 4. छात्रा 5. बालक 6. मालिन (ख) परिचय,

आकर्षक, चौकीदार, निढाल, शर्मीली (ग) अध्यापक, झील, विद्यालय, छात्र, कक्षा, पहाड़ियाँ (घ) 1. आना 2. मन को भाने वाला 3. जान-पहचान 4. बेजान 5. अहंकारी 6. हिचकिचाना (ङ) 1. मानसी कक्षा सात की छात्रा है1 2. मेरे विद्यालय में 30 अध्यापिकाएँ हैं1 3. मेरे विद्यालय में एक बहुत बड़ा और आकर्षक पार्क है। 4. मेरी अध्यापिका मुझे प्रेम से पढ़ाती हैं। 5. मानसी की बहादुरी की सभी ने प्रशंसा की।

पाठ-5 खेल और सेवा-भाव

❖ (क) 1. अ 2. स 3. स 4. ब 5. अ (ख) 1. प्रेम, मेल, सहयोग 2. प्रसन्नचित 3. सुभाष 4. रोते-रोते 5. हैजा (ग) 1. ✗, 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓; (घ) 1. माता ने बेटे से 2. सुभाष ने माता से 3. माता ने सुभाष से 4. नेहरू जी ने खिलाड़ियों से (ङ) 1. नेहरू जी के लिए खेल में हार-जीत का कोई महत्त्व नहीं था। 2. हिम्मत और लाचारी में नेहरू जी एक बात करने को कहते हैं कि अगर हिम्मत है, तो जीतो और अगर लाचारी है, तो हारो। 3. सुभाष को ढूँढने के लिए सब ओर व्यक्तियों को दौड़ाया गया। 4. जब सब लोग स्वस्थ हो गये और सेवा कार्य समाप्त हो गया तब सुभाष को माँ की याद आई। 5. उन्होंने किशोरावस्था में यह प्रतिज्ञा की ली वह जीवनभर अविवाहित रहकर देश की सेवा करेंगे। 6. जीत के अभिमान में हारे हुए को तुच्छ समझना, स्वयं हार जाने पर दुखी होना या अपने प्रतिद्वंदवी से ईर्ष्या करना बुरी बातें है। 7. अपने बेटे के स्पर्श से माता ने सुभाष को पहचान लिया।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. जीत 2. दुख 3. बुरा 4. बड़ा 5. अन्दर 6. उत्तर (ख) माता का तो रोते-रोते बुरा हाल हो गया। 2. सुभा ने चुपचाप आकर माता की आँखें बंद कर ली। 3. माँ ने बेटे के गाल पर प्यार की चपत लगाई। (ग) 1. देवालय 2. पुस्तकालय 3. मेघालय 4. गुणागार

पाठ-6 वीरों की पूजा

❖ (क) 1. स 2. अ 3. ब 4. स 5. अ (ख) 1. पथ आए भूल? कहाँ चढ़ेगा माला-फूल? 2. जौहर व्रत करना सीखा। बच्चों ने भी मरना सीखा। (ग) कवि कहते हैं कि उनको गंगा सागर रामेश्वर या काशी देखने की कोई इच्छा नहीं है। वह तो केवल चित्तौड़ जैसे तीर्थराज को देखना चाहते हैं जिसको देखने के लिए उनकी आँखे प्यासी हैं। 2. जहाँ माता, बहनों ने अपनी आन को बचाने के खुद को जला दिया उनके वीर पुत्र गर्व से अपनी माँ और भारत माँ की जय-जय बोल रहे हैं। (घ) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iv) 4. (i) (ङ) 1. मतवाले युवक थाल सजाकर तीर्थराज चित्तौड़ को पूजने चले हैं। 2. कवि ने तीर्थराज चित्तौड़ को बताया है। 3. जवानों की टोलियाँ दुश्मन से लड़ने के लिए तलवारें लेकर निकल पड़ी हैं। ये शत्रु स्वतंत्र दुर्ग पर आक्रमण करना चाहते हैं। 4. वीर मंडली गर्वित स्वर अपनी माता और भारत माता की जय बोल रही हैं। 5. कवि ने देश-प्रेम के लिए वीर पुरुष, वीरांगनाओं और जवानों का उदाहरण दिया है।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. रास्ता, मार्ग, सड़क 2. किला, गढ़, कोट 3. दुश्मन, शत्रु, रिपु, (ख) 1. विनय – रात भर जागता रहा। 2. राकेश – सो रहा है। 3. शेर –टहल रहा है। 4. लड़का – खाना खा रहा है।

पाठ-7 आगरा का सौंदर्य

❖ (क) 1. अ 2. अ 3. अ 4. ब 5. अ (ख) 1. सामान 2. प्लेटफार्म 3. दयालबाग 4. दृश्यों 5. नाश्ते (ग) 1. ✗, 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗; (घ) 1. परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद सभी आगरा घूमने जा रहे थे। 2. डिब्बे में बैठे कुछ यात्री अखबार और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ रहे थे। 3. ताजमहल आगरा में स्थित है। इसे मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताजमहल की याद में बनवाया था। 4. आगरा पहुँचकर सभी ने ताजमहल, लालकिला, एतमातुद्दौला, दयालबाग और शाहजहाँ पार्क देखा। 5. आगरा के जूते, दालमोठ, पेठा तथा सोन हलवा प्रसिद्ध हैं। 6. यात्रा मन में एक उत्साह और जोश भर देती है। जब हम नियचमित दिनचर्या से ऊब जाते तो यात्रा जीवन में एक परिवर्तन लाती है। 7. बुलंद दरवाजे का निर्माण अकबर ने दक्षिण भारत की विजय के उपरांत करवाया था।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. दिन 2. दुख 3. अप्रसिद्ध 4. अनियमित 5. अनावश्यक 6. कम (ख) राधा ने गाना गया। तैरना एक अच्छा व्यायाम है। हमें देखना चाहिए कि किसी को हमारे कारण कोई हानि न हो।

पाठ-8 खुशहाली

❖ (क) 1. ब; 2. अ, 3. स; (ख) 1. ✓, 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗; (ग) 1. कहीं खड़े ऊँचे-ऊँचे गिरि, कहीं सिंधु का ज्वार। 2. जलता रेगिस्तान कहीं है, गंगा-यमुना की धार। 3. ग्रीष्म दहकती, कण-कण तपता। 4. शरद चाँदनी छिटकी भू पर, दुग्ध-धवल विस्तार। 5. तरु-तरु पर, पत्ते-पत्ते पर, हैं चाँदी के हार।; (घ) कहीं खड़े ऊँचे-ऊँचे गिरि, कहीं सिंधु का ज्वार। जलता रेगिस्तान कहीं है, गंगा-यमुना की धार। यह पद कविता का सबसे सुन्दर है। क्योंकि इसमें प्रकृति के विविध स्वरूपों का वर्णन है।; (ङ) 1. कहीं नील गगन है, हरी-भरी धरती है, धूप बिल्कुल सोने जैसी चमकती है इसलिए भारत का रूप निराला कहा गया है। 2. कवि बंजारे को अपने भारत के विविध रूपों से अवगत कराना चाहता है और यह तभी संभव है जब बंजारे को भारत के रूप दिखाए जाए। 3. ऊँचे पहाड़ और समुद्र तथा रेगिस्तान और जल-धार एक दूसरे के विलोम पर परन्तु फिर भी भारत में यह एक की है। 4. गर्मी में धरती का कण-कण तप रहा है। 5. गर्मी के बाद सावन आता है। कवि कहते हैं घुमड़-घुमड़ सावन घिर आता, रिमझिम मसत फुहार। 6. कवि कहते हैं शरद चाँदनी छिटकी भू पर, दुग्ध-धवल विस्तार।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. पहाड़ 2. फैलाव 3. लहर 4. जिसके समान कोई न हो 5. घाटी 6. पर्वत 7. सफेद 8. अलग-अलग (ख) 1. भाटा 2. कठोर 3. नीचा 4. कैद 5. आकाश 6.

काला 7. उठना 8. बुझता (ग) 1. गगन, धरती, सोने, बंजारे, धरती 2. हिमगिरी, सागर, आँचल, वतन, धरती, बादल

पाठ-9 मधुर वचन

❖ (क) 1. स 2. ब 3. अ (ख) 1. श्रेष्ठ 2. धन्यवाद 3. प्रशंसा, निश्चय 4. गरीब (ग) 1. ✗, 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓; (घ) 1. किसान ने कवि से 2. किसान ने कवि से 3. किसान ने कवि से 4. कवि ने किसान से 5. किसान ने कवि से (ङ) (v) 4. (iii) 5. (ii) (ङ) 1. ii, 2. iii, 3. i, 4. v, 5. vi, 6. iv (च) 1. प्रसिद्ध कवि किसान के पास उसकी प्रशंसा में कविता सुनाने गया था, ताकि वह उसे प्रसन्न कर सके और कुछ इनाम पा सके। 2. किसान ने कवि की प्रशंसा सुनकर उसे अगले दिन दो बोरे चावल और पाँच बोरे गेहूँ देने का वादा किया। 3. किसान ने पूछा– ''अरे कवि महाराज, आज सुबह-सुबह इतनी जल्दी क्यों आ गए? क्या आपको कुछ परेशानी है?'' 4. किसान के अनाज न देने पर कवि बहुत हैरान और उदास हो गया! उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। 5. इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि झूठी प्रशंसा नही करनी चाहिए! हमें सच्चाई और ईमानदारी से काम करना चाहिए।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. छात्र, 2. नेता, 3. अध्यापक 4. बालक, 5. शिष्य 6. लेखक 7. पिता 8. भाई (ख) 1. बहुत समय पहले की बात 2. कवि को कविता कहने की बुरी आदत थी 3. मीठे बोल सुनकर कवि बहुत प्रसन्न हुआ। 4. कवि बहुत उदास हो गया। (ग) 1. कवि- शायर, काव्यकार 2. किसान- कृषक, खेतिहर 3. प्रसन्न- खुश, आनंदित 4. धन- संपत्ति, दौलत

पाठ-10 स्वामी विवेकानन्द

❖ (क) 1. स 2. अ 3. ब 4. ब 5. ब (ख) 1. 1863 2. परिश्रमी, बुद्धिमान और अनुशासनप्रिय 3. हलचल 4. परमहंस 5. ब्रह्म (ग) 1. (vi) 2. (v) 3. (iii) 4. (iv) 5. (i) 6. (ii) (घ) 1. हमारे देश में गौतम, कणाद, अंगिरा, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, आत्रि, याज्ञवल्क्य जैसे महान् ऋषि-मुनि हुए हैं। 2. विवेकानंद का बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। 3. विवेकानंद जी जब स्वामी जी से मिले और उनसे कुछ प्रश्न किए तो उनके उत्तर बड़े स्पष्ट एवं विश्वास से परिपूर्ण थे। जिसने उनको परमहंस का शिष्य बना दिया। 4. विवेकानंद जी ने शिकागों में होने वाले धर्म सम्मेलन में अपना व्याखान दिया तो सारा जनसमूह मुग्ध हो गया। यह भाषण लगातार चौदह दिन तक चला। 5. ईसाई प्रोफेसर श्री मुदालियर और जस्टिस सुब्रह्मण्यम अय्यर तथा खेत्री के महाराज उनके प्रमुख शिष्यों में से हो।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. मानव, इंसान 2. माँ, जननी 3. प्रभु, भगवान 4. छात्र, शिष्य 5. जग, सृष्टि 6. द्वार, गेट (ख) 2. प्रभावशाली 3. शक्तिशाली 4. भाग्यशाली (ग) 1. धार्मिक/धर्मपरायण 2. न्यायप्रिय 3. कुशाग्रबुद्धि 4. दृशनीय (घ) 1. वह कलकत्ता में रहता है।

2. वह उच्च श्रेणी का है परन्तु जरा भी घमंडी नहीं है। 3. उसे घुड़सवारी से अधिक घुड़दौड़ पसंद है। 4. राहुल हर समस्या का समाधान सहजता से ढूँढ़ लेता है। 5. दया कल शिकागों जाएगी।

पाठ-11 संतों की वाणी

❖ (क) 1. ब 2. अ 3. ब (ख) 1. करत, करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात से, सिल पर परत निसान।। 2. काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब। 3. कबिरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर। ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।। 4. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर। 5. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।। (ग) 1. (ii) 2. (iii) 3. (i) (घ) 1. कबीरदास जी कहते हैं कि मेरे गुरु और ईश्वर दोनों मेरे सामने खड़े हैं में पहले किसके चरण स्पर्श करूँ? ईश्वर ने बताया कि पहले गुरू के चरण स्पर्श करूँ। वह ईश्वर से बड़े हैं। 2. कबीरदास जी कहते हैं कि हमें ऐसी वाणी में बात करनी चाहिए जो सबका मन मोह ले। वाणी ऐसी हो जो स्वयं को ओर दूसरों को शान्ति दें। 3. कबीर दास जी कहते हैं जो काम्र है उसे कल पर मत छोड़ों। जो कार्य कल करना है उसे आज कर लो और आज का कार्य अभी कर लो। पल भर में ही समय बदल जाता तब तुम अपना कार्य कब करोगे। 4. कबीर दास जी कहते हैं कि बार-बार अभ्यास करने से तो मूर्ख भी बुद्धिमान बन जाता है जिस पर एक बड़े से पहाड़ पर भी रस्सी के बार-बार घिसने से निशान पड़ जाते हैं। (ङ) 1. गुरु हमें संसारिक ज्ञान देते हैं। हमें सही-गलत का भेद बताते हैं इसलिए गुरु की महत्ता ईश्वर से अधिक है। 2. कबीरदास जी पूरी मानव जाति की खैरियत चाह रहे हैं। 3. सच्चे व्यक्तियों के हृदय में ईश्वर वास कहते हैं। 4. हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो किसी के हृदय को न दुखाए। 5. निरन्तर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी बुद्धिमान बन सकता है। 6. हमें अपना व्यवहार सबके साथ कोमल व सरल रखना चाहिए।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. सच 2. हृदय 3. रस्सी 4. वाणी 5. शीतल 6. शिला 7. प्रलय 8. काल 9. क्यों (ग) 1. हिमालय 2. रविद्रं 3. महात्मा 4. परोपकार 5. प्रत्येक 6. विद्यार्थी

पाठ-12 पर्यावरण जागरूकता

❖ (क) 1. अ 2. ब 3. अ (ख) 1. 5 जून 2. वर्षा 3. अमूल्य 4. कटाई 5. नदियों, झीलों (ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗; (घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (v) 4. (ii) 5. (iii) (ङ) 1. वृक्ष जीवन के मूल आधार हैं। 2. वृक्षों की लकड़ी से फर्नीचर, औषधियाँ, दातुन आदि प्राप्त होते हैं। 3. जंगलों की कटाई के कारण खाद्य पदार्थ दिन-प्रतिदिन महँगे होते जा रहे हैं1 4. सरकार मकानों और उद्योगों के निर्माण के लिए जंगल साफ कर रही है। 5. हम वृक्षों के रोपण कर हरियाली को बढ़ा सकते हैं। 6. 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. मैंने आपकी पुस्तक नहीं ली। 2. मेरी माताजी कल आएँगी। 3. देवी दुर्गा की पूजा चल रही है। 4. पार्क में एक बच्चा खेल रहा है। 5. क्या तुमने भोजन किया है? (ख) 1. प्रिय 2. कठिन 3. अनर्थ 4. अनिच्छा 5. अनादर 6. प्रश्न 7. प्रदान 8. बहादुर 9. व्यय 10. कठोर (ग) ऑक्सीजन जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है। 2. वायुमण्डल में कई प्रकार की गैसे होती है। 3. वृक्ष हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। 4. मानव के संसाधन प्रदूषण का एक कारक है। 5. लकड़ी वृक्षों से प्राप्त होती है। (घ) 1. जवाब, हल 2. माधव, हरि 3. अध्यापक, शिक्षक 4. शहद, सुधा 5. लक्ष्मी, धन

पाठ-13 बैल की सूझबूझ

❖ (क) 1. अ 2. ब 3. ब 4. अ 5. ब (ख) 1. स्वार्थी 2. प्रबंध 3. बुद्धि 4. भयंकर 5. धूर्त (ग) 1. सियार ने 2. सियार ने 3. बैल ने 4. शेर ने 5. बैल ने (घ) 1. बैल बूढ़ा हो गया था इसलिए उसके मालिक ने उसे छोड़ दिया। 2. जब शेर बैल के पास पहुँचा तो बैल जोर से बोला कि इधर एक शेर आ रहा है। तुम शोर मत मचाना मैं उसे अपने सीगों से मार डालूँगा। यह सुनकर शेर डर गया। 3. सियार ने शेर को समझाया कि वह कोई खतरनाक जानवर नहीं है वह केवल एक साधारण सा बैल है। 4. शेर के मन में बैल का डर बैठ गया था इसलिए वह सियार की बात मानने के लिए तैयार नहीं था। 5. सियार ने कहा कि आप अपनी पूँछ मेरी पूँछ में बाँध लो अगर कोई हानि हुई तो पहले मैं झेलूंगा। इस बात पर शेर सियार के साथ चलने के लिए तैयार हुआ। 6. सियार के साथ शेर को देखकर बैल जोर से बोला कि सियार तुझे दो शेर लाने के लिए कहा था और तू केवल एक शेर ही लेकर आया यह सुनकर शेर उल्टे पाँव भाग गया।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. स्वार्थी 2. खतरनाक 3. सुरक्षित 1. भाग्यवान 2. धनवान 3. बलवान 4. गुणवान (ख) 1. मूर्ख + ता = मूर्खता 2. स्वच्छ + ता = स्वच्छता 3. धूर्त + ता = धूर्तता 4. चतुर + ता = चतुरता

पाठ-14 तोलकवि की बुद्धिमानी

❖ (क) 1. अ 2. स 3. स 4. ब 5. स (ख) 1. तोलकवि 2. अनमने 3. निडर 4. आधार 5. गिड़गिड़ाने (ग) 1. ✓, 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓; (घ) 1. शिकायती टट्टुओं ने महाराज से 2. महाराज ने तोलकवि से 3. महाराज ने तोलकवि से 4. तोलकवि ने महाराज से। (ङ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (v) 4. (i) 5. (ii) (च) 1. तोलकवि केरल के राजा का मंत्री था। उनकी बुद्धिमानी, चतुरता और हाजिर जवाब होने के कारण वह राजा के प्रिय थे जिसके कारण राजा के दरबारी उनसे जलते थे। 2. जब राजा स्नान करने नदी पर गए और अपनी अगूँठी नदी किनारे रखी तो तोलकवि ने अगूँठी को उठाकर म्यान में रख दिया। 3. अँगूठी के खो जाने पर दरबारियों ने तोलकवि को फँसाकर राजा के सामने चोर साबित करना चाहा। 4. राजा ने तोलकवि को उबलते हुए पानी में हाथ डालने को कहा। 5. तोलकवि के

कहने पर जेसे ही राजा ने सेवक को धमकाने के लिए तलवार निकाली राजा ने तलवार की नोंक पर चमकती हुई अगूँठी देखी। 6. इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि समझदारी से किसी भी समस्या का निदान किया जा सकता है।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. खेल 2. हँसी 3. मेल 4. पिसाई (ख) 1. दैनिक 2. धार्मिक 3. वैचारिक 4. ऐतिहासिक

पाठ-15 कलम की कथा

❖ (क) 1. स 2. ब 3. स 4. ब 5. अ (ख) 1. पेन 2. हृदय 3. मूर्खजनों 4. हार्दिक 5. सत्संगति (ग) 1. ✓, 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓; (घ) 1. लेखनी का प्रयोग समाज के सभी वर्ग, डॉक्टर, वकील, विद्यार्थी, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सभी करते हैं। 2. लेखनी का जन्म एक पौधे से हुआ। मनुष्य ने लकड़ी के सिरे को काटकर और छील-छीलकर नुकीला बना दिया और लेखनी बनाई, कभी रबर की थैली में स्याही भरकर काम किया, कभी प्लास्टिक की रिफिल लगाकर उसका स्वरूप बदल दिया। 3. लेखनी से मनुष्य ने उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, निबंध, कोष, इतिहास लिखे। इसके कारण मनोवंछित विषयों को पढ़ सकते हैं। इससे मनुष्य के भूलने की और रटने की समस्या का समाधान हो गया। 4. जब लोग लेखनी को स्नेह से पकड़ते हैं और अपने गालों और होठों का स्पर्श भी कराते हैं तब वह लेखनी के प्रति अपना स्नेह जताते हैं। 5. लेखनी की हार्दिक इच्छा है कि संसार के सभी लोग उसका प्रयोग करें।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. मनुज, आदमी 2. दुख, वेदना 3. चेहरा, वदन 4. निदान, हल (ख) 1. राष्ट्र + पति 2. सुविधा + अनुसार 3. इति + हास 4. विद्या + अर्थी

पाठ-16 चाचा नेहरू का पत्र

❖ (क) 1. स 2. अ 3. अ (ख) 1. जवाहरलाल नेहरू 2. एक से 3. हाथी 4. जल-मार्ग 5. खेलना (ग) 1. ✓, 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓; (घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (v) 4. (iii) 5. (ii) (ङ) 1. नेहरू जी बच्चों को देखकर अपना बुढ़ापा भूल जाते थे और उनको अपना बचपन याद आ जाता था। 2. नेहरू जी ने पत्र मे आँखे खोलकर और ध्यान देकर प्रकृति के साथ प्यार और ममता से व्यवहार करने की सलाह दी है। 3. धर्म, जाति, पंथ, वर्ण, दल, राज्य भाषा, रीति-रिवाज़ को ख्याली दीवार कहा है। 4. नेहरू जी ने एक हाथी जापानी बच्चों के लिए उपहार में भेजा। 5. नेहरू जी सभी को देश के लिए कुछ न कुछ करने की सलाह दी। इसके लिए हर व्यक्ति को दूसरे का हाथ बटाँना पड़ेगा। 6. नेहरू जी ने फूलों को सुन्दर खिले हुए फूल तथा खेतों को लहलहाते हुए खेत बताया।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 2. लिखता, लिखाया, लिखूँगा। 3. हसँता, हँसाया, हसुँगा 4. खाता, खाया, खाऊँगा 5. खेलता, खिलाया, खिलूँगा। (ख) 1. हाथियों 2. नारियाँ 3. घोड़े 4. महिलाएँ

5. बालिकाएँ 6. चोरों 7. वधुएँ 8. सैनिकों 9. गायें 10. चिड़ियाँ (ग) 1. मुझे घूमना पसंद है। 2. नेहरू जी ने बच्चों को चिट्ठी लिखी। 3. मेरी माँ का नाम ममता है। 4. झंडा हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है। 5. हमारे देश में महान नेता हुए हैं। (घ) 1. लोगों 2. सुंदर 3. पसंद 4. आँखे 5. ऊँची 6. माँगा 7. वहाँ 8. पहुँचे 9. हूँ 10. मैं

पाठ-17 छेदीलाल के खर्राटे

❖ (क) 1. अ 2. ब 3. अ (ख) 1. बच्चों 2. दफ्तर 3. छेदीलाल 4. जीत 5. मेजों (ग) 1. ✓, 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗; (घ) 1. iii, 2. iv, 3. v, 4. ii, 5. i, (ङ) 1. छेदीलाल को सोता हुआ देखकर मच्छर उनके शरीर के ऊपर मंडराते रहे, पर उनके ऊपर बैठने का साहस नही करते थे। 2. लेखक ने छेदीलाल को खर्राटों को मजा लेने के लिए घर बुलाया। 3. एक दिन खाना खाते समय उन्हें नींद का झोंका आ गया और वे आगे की ओर मुँह के बल गिर पड़े। इसलिए लेखक उन्हें उठाकर मुँह धुलवाने ले गया। 4. भूदेव गुप्ता ने कहा कि चिंता करने वालों की नींद रात में कई बार खुलती है। 5. लेखक की बातों से श्यामसिंह को लगा कि उसकी बात गलत साबित हो रही है। इसकी कार वह चिढ़ गया और खिसिया गया।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. सन्नाटे को चीरना – बहुत तेज आवाज़ करना।

वाक्य – ट्रेन की सीटी ने सन्नाटे को चीर दिया

2. मीठी झुँझलाहट दिखाना– प्यार भरा गुस्सा करना।

वाक्य – माँ ने मुझे देर से आने पर मीठी झुँझलाहट दिखाई।

3. खून पीना – बहुत परेशान करना।

वाक्य – मच्छरों ने रात भर मेरा खून पी लिया।

4. नाक फुलाना – गुस्सा होना।

वाक्य – बात सुनकर उसकी नाक फूल गई

(ख) 1. खिड़कियाँ 2. विमान 3. झाड़ियाँ 4. पुस्तकें 5. फाइलें 6. बीमारियाँ

पाठ-18 ईश्वरचंद्र विद्यासागर

❖ (क) 1. अ 2. स 3. ब 4. अ, ब 5. ब (ख) 1. अकाल 2. रुपया 3. अविश्वास 4. हाथ, पाँव 5. देशभक्त, समाज सुधारक (ग) 1. ✗, 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗; (घ) 1. द्वितीय विश्व युद्ध सन् 1939 में हुआ। 2. अकाल के कारण निर्धन लोग लावारिस पशुओं की तरह भूख से मरने लगे, गरीब माता-पिता भूख से तड़पते हुए छोटे-छोटे बच्चों को रास्तों और सड़कों पर छोड़ जाते। भूख से तड़पकर मरने वालों की संख्या बढ़ रही थी। 3. ईश्वरचंद्र विद्यासगार ने भूख से तड़पते युवक को एक रुपया देकर सहायता की। 4. विद्यासागर अपने द्वारा किए गए सहयोग को लेकर कुछ सोच, कुछ प्रसन्न और कुछ उदास मन से देख रहे थे। 5. विद्यासागर ने युवक को कहा कि तुम्हारे पास दो हाथ और दो पाँव हैं। तुम्हें किसी की दया की जरूरत नहीं है। यह प्रेरणा युवक

को आगे तक ले गई। 6. इस प्रेरणा से पहले फल बेचे और धीरे-धीरे बाजार में फलों की एक अच्छी सी दुकान ले ली।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. लावारिस 2. असहयोग 3. धनी 4. अप्रसन्न 5. अपकार 6. अविश्वास

(ख) 1. विद्यासागर की बातों से छोटे लड़के को प्रेरण मिली। 2. छोटा लड़का लावारिस नहीं था। 3. बंगाल में 1939 में भयानक अकाल पड़ा। 4. विद्यासागर की बातों का लड़के ने अनुकरण किया। 5. यह घटना मेरे जीवन की यादगार घटना है। 6. भगत सिंह सच्चे देशभक्त थे।

पाठ-19 परोपकारी मूसाई

❖ (क) 1. अ 2. ब 3. ब 4. स, 5. अ (ख) 1. बाज़ 2. साहस 3. भली 4. धन 5. माँ (ग) 1. ✗, 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓; 6. ✗; (घ) 1. तूसाई 2. जापान में 3. सिकाडो (ङ) **1.** मूसाई जापान का रहने वाला था और एक साधारण चरवाह था। 2. गायें चरवाते समय एक बगुला उड़ता हुआ उसके पैरों में आकर गिरा। 3. मूसाई ने बगुले पर हाथ फेरा, पानी से उसके पंख धोए और थोड़ा जल बगुले के मुँह में भी डाल दिया। 4. मूसाई की पत्नी घर का सारा काम स्वयं करती और अपनी सास की मन लगाकर सेवा करती इसलिए मूसाई की माँ अपनी बहू की प्रशंसा पूरे गाँव में करती। 5. मूसाई की शादी एक सुन्दर लड़की से हुई। वह कमरे में एक उजले बगुले के रूप में बैठी थी। 6. मूसाई की पत्नी ने कहा कि वह मलमल बुनना जानती है। वह मलमल बुन देंगी और मूसाई उसे बाजार में बेच आए। लेकिन जब वह मलमल बुनेगी तब कमरे में कोई न आए। 7. मूसाई की पत्नी वास्तव में एक उजला बगुला था। वह अपने पंखों से पतला तार नोंचकर और पंजों की सहायता से मलमल बुनता था।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. पति 2. काला 3. अप्रसन्न 4. दूर 5. बदसूरत 6. दुष्ट (ख) 1. अत्यधिक खुश होना। **वाक्य प्रयोग–** उम्मीद से अधिक धन पाकर राम फूल नहीं समा रहा है1 2. एक मात्र सहारा। **वाक्य प्रयोग–** राधा अपनी माँ की आँधे की लकड़ी के समान है।

पाठ-20 कंजूस का अंत

❖ (क) 1. स 2. स 3. ब (ख) 1. एकत्र 2. अकाल 3. त्राहि-त्राहि 4. उपवास, दुर्बल 5. अपने जीवन (ग) 1. गूढ़धन एक व्यापारी था। उसने सोचा कि इस धन को उसे किसी गुप्त स्थान पर छिपा देना चाहिए अन्यथा उसके परिवार के लोग इस धन का उपयोग कर लेंगे। 2. गूढ़धन बोला "तुम लोगों को पता है कि यह धन मेरे प्राणों से भी बढ़कर है, फिर भी तुम लोग माँग रहे हो, इससे तो अच्छा है कि तुम लोग मेरे प्राण ही माँग लो।" 3. गाँव वालों ने समझाते हुए उससे कहा कि तुम इस धन का क्या करोगे, जिसके रहते हुए भी तुम अपने प्राणों की रक्षा नहीं कर पा रहे हो। 4. समुद्र तट पर जाकर गूढ़धन ने नाविक से कहा कि मेरे परिवार के लोग मर गए है इसलिए मैं भी अपने प्राण त्यागना

चाहता हूँ लेकिन त्याग नहीं पा रहा हूँ। तुम मुझे समुद्र जल में डुबाकर मार डालो। 5. धन की पोटली देखकर नाविक ने मन में लालच आ गया इसलिए उसने गूढ़धन को मार डाला।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. निर्धन 2. बुद्धिमान 3. खर्चीला 4. समर्थ (ख) नासमझ, अज्ञानी, बेवकूफ 2. सागर, सिन्धु, जलधि 3. तीर किनारा, विहार 4. सम्पत्ति, सम्पदा, वैभव

पाठ-21 लालच

❖ (क) 1. स 2. अ 3. ब 4. स 5. ब (ख) 1. कीमियागिरी 2. उकसाता 3. बदबुदाया 4. पुलिस, अदालत 5. बयान (ग) 1. ✗, 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓; (घ) 1. व्यापारी ने 2. ठग ने, 3. व्यापारी ने 4. नौकर ने 5. ठग ने। (ङ) 1. व्यापारी ने अपने नौकर से कहा कि ये सौ संदूक हैं। इनमें से प्रत्येक में सौ-सौ सोने के टुकड़े हैं। इनका विशेष ध्यान रखना। 2. व्यापारी के जाने के बाद ठग ने नोकर से अपनी जान-पहचान बढ़ा ली। 3. नौकर को ठग ने कहा कि वह एक सोने के टुकड़े को दो कर देगा ओर उसने ऐसा कर दिखाया इसलिए नौकर को ठग पर विश्वास हो गया। 4. नौकर ने सारा धन शराब पीने और अय्याशी करने में खर्च कर दिया। 5. जब ठग और व्यापारी के बीच में धन को लेकर झगड़ा हुआ तब दोनों को अदालत ले जाया गया इस प्रकार नौकर ने ठग का राज खोल दिया।

व्याकरण एवं भाषा बोध–

(क) 1. अवधि – अधार 2. उधार – उदार; 3. अनल – अनिल, 4. आकार – आकर; 5. अतंर – अंदर; 6. उपेक्षा – अपेक्षा; (ख) 1. सेवक, चाकर, भृत्य 2. छली, फरेबी, छलिया, 3. दोस्त, सखा, बंधु, 4. दौलतमंद, धनी, धनिक